भगवान महावीर जन्मभूमि वैशाली

समग्र जैन और जैनेतर पुराणों एवं इतिहास से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध है कि तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर की जन्मस्थली कुण्डपुर (उपनाम-कुण्डपुर, कुण्डनगर, कुण्डग्राम, बासोकुण्ड या क्षत्रिय कुण्ड) है। यह स्थान पूर्वी भारत के विदेह जनपद के अन्तर्गत महानगरी वैशाली के पार्श्व प्रदेश में अवस्थित माना गया है। वैशाली की पहचान वर्तमान बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले के बसाढ़ नामक स्थान के रूप में की गई है जो पटना से लगभग 65 किमी. दूर है।

इस ऐतिहासिक तथ्य को जब सभी विद्वानों ने स्वीकारा तभी भारत तथा बिहार सरकार का ध्यान भगवान महावीर जैसी दिव्य-विभूति के प्रति श्रद्धानत् होकर वासोकुण्ड जन्मस्थान पर गया तथा भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने 23 अप्रैल, 1956 को भगवान महावीर स्मारक की आधारशिला रखी थी। एक एकड़ के भू-भाग पर, जिसे स्थानीय लोगों ने 'अहल्य क्षेत्र' रखते हुए समाज को समर्पित किया था, साहू-जैन ट्रस्ट ने प्रसिद्ध समाजसेवी साहू शान्ति प्रसादजी जैन के नेतृत्व में सन् 1955 में 'प्राकृत, जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान' के विशाल भवन का निर्माण कराया था।

वैशाली में भगवान महावीर के जन्म दिवस पर सन् 1948 ई. से 'वैशाली-महोत्सव' का आयोजन होता आया है। बावन पोखर से निकली जैन मंदिर में विराजमान भगवान महावीर की प्राचीन प्रतिमा की शोभायात्रा में बासोकुण्ड जन्मस्थान पर ले जाया जाता है और वहाँ पूजा-अर्चना के बाद श्रीजी का कलशाभिषेक किया जाता है।

बिहार सरकार द्वारा आयोजित इस पारम्परिक कार्यक्रम में राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी, डॉ. राधाकृष्णन् जी, डॉ. शंकरदयाल शर्माजी, प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी, केन्द्रीय मंत्री, राज्यपाल महोदय, माननीय मुख्यमंत्री, सांसद, प्रदेश मंत्रीगण, प्रमुख विद्वान् एवं अन्य विशिष्ट गणमान्यजन समय-समय पर पधारकर शोभा बढ़ाते रहे हैं। बिहार के राज्यपाल महोदय प्रतिवर्ष महोत्सव की अध्यक्षता करते हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज के मंगल आशीर्वाद एवं साहू रमेश चन्द जैन, श्री कैलाश चन्द पाण्ड्या (पटना) के अथक प्रयासों से भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक वर्ष 2000 से 2004 में 'भगवान महावीर स्मारक समिति' द्वारा अहल्य क्षेत्र के आस-पास की भूमि प्राप्त कर 5½ एकड़ के विशाल भू-भाग पर 'मास्टर प्लान' बनाकर भारत सरकार द्वारा प्रदत्त 4½ करोड़ की सहयोग राशि से भगवान के जन्म स्थल को 7½ किलोमीटर सड़क बनाकर मुख्य सड़क से जोड़ा गया। इसके अतिरिक्त गिजली, पानी, मुख्य द्वार का बनाना, बाउण्ड्री वॉल का निर्माण कराना आदि-आदि कार्यों के लिए सरकार से सहयोग प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री विद्यासागर जी मुनिराज, आचार्यश्री वर्धमान सागरजी मुनिराज, पूज्य स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी (श्रवणबेलगोला) एवं अन्य सन्तों का मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर निर्माणाधीन दिगम्बर जैन मंदिर के भव्य भवन का शिलान्यास दिल्ली के श्रेष्ठी श्री सुरेन्द्र कुमार जैन जौहरी के कर-कमलों से 4 नवम्बर, 2004 को सम्पन्न हुआ था।

सन् 1955 में साहू जैन ट्रस्ट की ओर से संस्थापित 'प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान' के लिए विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त करने हेतु प्रयास चल रहा है। 'तीर्थंकर महावीर जैन स्कूल' का जीर्णोद्धार एवं अस्पताल, महाविद्यालय आदि संकल्पित निर्माणों में समाहित हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए वैशाली को रेलमार्ग से सरकार द्वारा अतिशीघ्र जोड़ दिया जायेगा। विशाल सभा भवन (राजकुमार वर्द्धमान भवन) का निर्माण कार्य प्रगति पर है जिसमें वर्द्धमान राजकुमार की जीवन्त प्रतिमा अतिशीघ्र विराजमान की जायेगी।

भगवान महावीर जन्मभूमि 'वैशाली' में निर्मित किये जा रहे भव्य दिगम्बर जैन मंदिर तथा प्रस्तावित सन्त-निवास, साध्वी-निवास, संग्रहालय, पुस्तकालय, मानस्तम्भ, भोजनशाला, अस्पताल, महाविद्यालय आदि योजनाएं क्रियान्वित हैं।

भगवान महावीर स्मारक समिति द्वारा निर्माणाधीन मंदिर हेतु देश की दिगम्बर जैन समाज की सभी शीर्ष संस्थाओं एवं श्रावक समाज का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त है।

भगवान महावीरर स्मारक समिति, वासोकुण्ड, विदेह कुण्डपुर, वैशाली, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार) आपको वैशाली पधारने हेतु सादर आमन्त्रित करती है एवं आपकी मीडिया से अपेक्षा रखती है कि अहिंसा के पुजारी एवं विश्व को 'जीओ और जीने दो' का संदेश देने वाले भगवान महावीर की ऐतिहासिक जन्मभूमि को जन-जन के बीच में श्रद्धा का केन्द्र बनायें एवं इसके प्रचार-प्रसार में मीडिया की उल्लेखनीय भूमिका अदा करें।

-सतीश चन्द जैन, अध्यक्ष अर्थव्यवस्था